



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 61-63

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

शांता त्रिपाठी

वरिष्ठ प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
किस्मानित विश्वविद्यालय,
भुवनेश्वर, ओडिशा

आधुनिक हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा का योगदान

शांता त्रिपाठी

शोध सार

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के छायावादी युग की प्रमुख हस्तियों में एक हैं। साहित्यिक जीवन संवेदनशीलता सौंदर्य समाज के प्रति जागरूकता उनके साहित्य में सम्मिलित हैं। हिन्दी साहित्य के छायावादी युग के लेखन को शक्ति और आध्यात्मिक नारीवादी विचारों के प्रतीक के विस्तार के रूप में माना जाता है। उनकी रचना न केवल साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट है, बल्कि समाज सुधार और नारी सशक्तिकरण के विचारों का प्रतिनिधित्व भी करती है। महादेवी वर्मा का साहित्य हिन्दी साहित्य की धरोहर है, जिसने साहित्यिक और सामाजिक क्षेत्रों में नए मानदंड स्थापित किए हैं।

कुंजी शब्द - महादेवी वर्मा, छायावाद, हिन्दी साहित्य, काव्य साहित्य, नारी सशक्तिकरण, सामाजिक चेतना, साहित्यिक योगदान, छायावादी कविता, यामा, निहार, सामाजिक सुधार

महादेवी वर्मा की कविता में निराशा और वेदना का प्रबल भाव मिलता है, जिस कारण उन्हें वेदना की कवयित्री भी कहा जाता है। उन्होंने स्त्रियों की वेदना को अनुभव किया तथा उस दर्द और पीड़ा को दूसरों को दिखाने के लिए अपनी कविताओं में उपस्थित किया। 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में उन्होंने लिखा है कि -

मैं नीर भरी दुख की बदली

मैं तुमको कुछ न कह सकूंगी

तुम करुणा के दिल से,

करुणा के धन से

भर न सको, तो कुछ न कहूँगी।¹

महादेवी वर्मा का हिन्दी साहित्य में अतुलनीय और विशिष्ट योगदान रहा है। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के छायावादी युग की अत्यधिक प्रभावशाली कवयित्री हैं, जिन्हें छायावादी युग की प्रमुख स्तंभ तथा आधुनिक मीरा भी कहा जाता है। अपनी लेखनी से महादेवी जी ने न केवल कविता की नई धारा को जन्म दिया, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं को भी साहित्य में उतारा। उनका साहित्य अत्यंत संवेदनशील, भावुक और सामाजिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है। उन्होंने अपने काव्य संग्रह 'यामा' और 'निहार' के माध्यम से छायावादी युग को आत्मा और भावना प्रदान किया है। महादेवी वर्मा का लेखन केवल एक साहित्यिक धरोहर नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन का हिस्सा भी है। महादेवी वर्मा ने नारी समाज में कई प्रकार से विकासशील कार्य किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा नारियों को अबला न होने का संदेश दिया। महादेवी वर्मा ने केवल महिलाओं की समस्याओं को इंगित नहीं किया है, बल्कि उन्होंने नारी जगत को रूढ़िवादी भारतीय संदर्भ से मुक्ति का संदेश भी दिया है। नारी मुक्ति के विषय में उनका विचार है कि भारत की स्त्री तो भारत मां की प्रतीक है, वह अपनी समस्त संतान को सुखी देखना चाहती है, इसलिए नारी की उन्नति से देश की उन्नति होगी। महादेवी

Correspondence:

शांता त्रिपाठी

वरिष्ठ प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग,
किस्मानित विश्वविद्यालय,
भुवनेश्वर, ओडिशा

वर्मा जी ने नारी को त्याग, ममता, स्नेह और सहनशीलता की मूर्ति माना है। नारी जीवन में अनेक कष्ट सहती है, परंतु वह अपने प्रेम तथा धीरज से अपने परिवार को संभालती है। यही कारण है कि समाज को नारी का सम्मान और उसके अधिकारों का आदर करना चाहिए।

अपने निबंध में महादेवी वर्मा लिखती हैं कि – “हिन्दू नारी का, घर और समाज इन्हीं दो से विशेष सम्पर्क रहता है। परन्तु इन दोनों ही स्थानों में उसकी स्थिति कितनी करुण है, इसके विचारमात्र से ही किसी भी सहृदय का हृदय काँपे बिना नहीं रहता। अपने पितृगृह में उसे वैसा ही स्थान मिलता है जैसा किसी दुकान में उस वस्तु को प्राप्त होता है जिसके रखने और बेचने दोनों ही में दुकानदार को हानि की सम्भावना रहती है।”²

उक्त पंक्तियों में महादेवी वर्मा ने नारी के मातृत्व, त्याग, सहनशीलता और संघर्ष को दर्शाया है। महादेवी वर्मा ने अपनी रचनाओं में नारी को केवल करुणा का प्रतीक ही नहीं, बल्कि शक्ति, धैर्य और आत्मसम्मान की प्रतिमा का स्वरूप भी बताया है। नारी के सशक्त होने से देश भी सशक्त होता है। महादेवी वर्मा जी के साहित्यिक योगदान को विभिन्न पहलुओं को उजागर कर समझा जा सकता है।

1. छायावाद की प्रमुख कवयित्री के रूप में महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा जी ने छायावादी युग तथा साहित्य समाज को भावनात्मक गहराई, करुणा, वेदना, आध्यात्मिक प्रेम, सामाजिक ज्ञान, संवेदनशीलता आदि प्रदान किया है। उनकी कविताओं में आत्मा और परमात्मा के मिलन की भावना दिखाई देती है।

मैं नीर भरी दुःख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही—
उमड़ी कल थी, मिट आज चली।³

2. नारी चेतना और महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा जी ने अपनी रचनाओं में नारी की पीड़ा को, उसके संघर्ष, त्याग और आत्मसम्मान को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। उनकी कृति “श्रृंखला की कड़ियाँ” नारी जागरण की महत्वपूर्ण रचनाओं में गणनीय है। उनकी रचनाओं में संवेदनशीलता, विरह, अकेलापन, अजनबीयत, करुणा और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक मिश्रण मिलता है।

नीरजा, रश्मि, दीपशिखा, यामा आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त महादेवी जी ने गद्य साहित्य के अंतर्गत संस्मरण, रेखाचित्र और निबंध के क्षेत्र में भी अनिर्वचनीय कार्य किया है। अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार आदि उनकी प्रमुख गद्य कृतियाँ हैं।

महादेवी वर्मा जी ने महिला शिक्षा तथा सशक्तिकरण के लिए अतिशय कार्य किया है तथा समाज सुधार में सक्रिय भूमिका भी निभाई। नारी विमर्श पर लिखने वाली हिन्दी की पहली महिला लेखिका के रूप में महादेवी वर्मा को जाना जाता है। उन्होंने छायावादी काल के से ही स्त्री चेतना और उसके अधिकारों पर

गंभीरता से विचार किया। महादेवी वर्मा के विचारों को यदि ध्यान से देखें, तो यह पता चलता है कि उन्होंने इस समस्या को केवल साहित्य तक सीमित एक विचारधारा नहीं, बल्कि महिलाओं की वास्तविक मुक्ति, चेतना जागृति और सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समानता प्राप्त करने का एक सतत संघर्ष कायम रखा है।

नारी सहनशीलता, ममता और त्याग की प्रतिमा है। वह अपने दुखों को छिपाकर दूसरों को सुख देती है। बंधनों में रहकर भी नारी प्रेम, करुणा और धैर्य से परिवार और समाज को संभालती है। नारी केवल दया की पात्र नहीं, बल्कि शक्ति और आत्मसम्मान की प्रतीक है। इस विषय पर महादेवी वर्मा ने अपने एक निबंध में लिखा है कि – “इस विषमता का युगान्तरदीर्घ कारण केवल एक ही कहा जा सकता है दुर्बलता, जिसका प्रायः कोमलता के नाम से नामकरण किया जाता है। नारी के स्वभाव में कोमलता के आवरण में जो दुर्बलता छिप गई है, वही उसके शरीर में सुकुमारता बन गई। यह सत्य नहीं है कि वह इस दुर्बलता पर विजय नहीं पा सकती, पर यह निर्विवाद सिद्ध है कि वह अनादि काल से उसे अपना अलंकार समझती रहने के कारण त्यागने पर उद्यत ही नहीं होती।”⁴

नारी दीया की तरह होती है, जो खुद जलकर सभी को आनंद दिलाती है। जिस प्रकार दीया को न दुःख का पता चलता है और न ही दर्द का अनुभव होता है, वह खुद जलकर चहुं ओर आलोक फैलाती है, ठीक उसी प्रकार नारी भी दुःख और करुणा से भरी रहती है, करुणा की नदी होती है।

• नारी सशक्तिकरण -

समाज का विकास तभी संभव है जब नारी को उसका सही स्थान और अधिकार मिले। नारी कोई भोग वस्तु नहीं है। वह तो प्रेरणादाई है, वह तो शक्तिमयी है, वह सृष्टि कर्ता है। नारी का अपमान करके कोई ऊपर उठ नहीं सकता। महादेवी वर्मा कहती भी हैं कि नारियों को अपने आप को कमजोर नहीं समझना चाहिए। नारी को अपनी रक्षा खुद करनी चाहिए। जो नारी कोमल हाथों से खाना बना सकती है, वह नारी सैकड़ों राक्षसों को मारने की क्षमता भी रखती है। आदिकाल से आज तक विकास पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सफल बनाकर, उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर तथा अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर नारी मानवों के व्यक्तित्व, चेतना और हृदय का विकास करती है।

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते

रमन्ते तत्र देवताः”⁵

मनुस्मृति के इस श्लोक के अनुसार जहाँ नारियों का सम्मान व पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। यह श्लोक भारतीय संस्कृति में महिला सशक्तिकरण और मातृशक्ति के महत्व को दर्शाता है। यही महत्व महादेवी वर्मा जी के साहित्य में भी दृष्टिगोचर होता है।

नारी को सम्मान, समाज में उच्च स्थान देकर जब उसे पुरुष का सहयोगी बना लिया जाता है, तो समृद्धि, यश, वैभव की बढ़ोतरी होती है। इसी से सुख, शांति तथा संतोषजनक जीवन बिताया जा सकता है। महादेवी वर्मा नारी शक्ति विषयक अपने एक निबंध में लिखती हैं – “इस समय आवश्यकता है एक ऐसे देशव्यापी आन्दोलन

की, जो सबको सजग कर दे, उन्हें इस दिशा में प्रयत्नशीलता दे और नारी की वेदना का यथार्थ अनुभव करने के लिए उनके हृदय को सम्बेदनशील बना दे जिससे मनुष्य जाति के कलंक के समान लगने वाले इन अत्याचारों का तुरन्त अन्त हो जाए, अन्यथा नारी के लिए नारीत्व अभिशाप तो है ही।”⁶

● सामाजिक चेतना –

नारी की सामाजिक चेतना को गहराई से समझने की आवश्यकता है। मानवतावादी दृष्टिकोण से नारी समाज में एक अनुपम स्थान रखती है। नारी को सामाजिक पहचान दिलाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

“ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।

सकल ताड़ना के अधिकारी।”⁷

ताड़ना का अर्थ होता है शिक्षा। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित यह चौपाई वर्षों पहले ही कहीं न कहीं यह सुनिश्चित कर चुकी है कि नारी को शिक्षा का अधिकार सर्वमान्य है। एक शिक्षित नारी पूरे परिवार को शिक्षित बनाती है। विशेष रूप से शोषित, पीड़ित और वंचित वर्गों के प्रति हमें खासतौर से ध्यान देना चाहिए।

नारी आग की तरह है, जो उसके साथ खिलवाड़ करेगा उसका अंत निश्चित है। बात करें असामाजिक तत्वों की, रुढ़िवादिता की, तो समाज में अंधविश्वास, छुआछूत से ऊपर उठकर हमें विकास के मार्ग पर बढ़ना चाहिए। समाज में छुआछूत को लेकर बहुत संघर्ष होता रहा है। जाति तो एक है, वह है मनुष्य जाति। मतलबी दुनिया में मनुष्य जाति भी दो भागों में बांटकर रह गया है। आर्थिक रूप से संपन्न और आर्थिक स्तर से विपन्न वर्ग। धनी आदमी गरीब आदमी को छूने से भी इनकार करता है। ऐसे में नारियों को दोहरा संघर्ष करना पड़ता है। नारी के भाग्य में दुख और दर्द होता है। नारी को लिंग आधारित भेदभाव, घरेलू हिंसा और ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र में असमान अवसर जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिलाओं के समग्र कल्याण और विकास के पथ पर उक्त कारण अड़चने बहुत प्रभावित करती है। घरेलू और यौन हिंसा महिलाओं के लिए एक गंभीर समस्या बनी हुई है। शहरी शिक्षा प्राप्त महिलाओं की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं की स्थिति दयनीय है। महिला श्रमिकों की भागीदारी में गिरावट आई है और वह अभी भी पुरुषों के समान पारिश्रमिक और कार्य स्थल पर बराबरी की स्थिति से वंचित है। नारी को सामाजिक चेतना के जागरूक करते हुए ‘जाग तुझको दूर जाना’ कविता में महादेवी वर्मा लिखती हैं-

“जाग तुझको दूर जाना,

नींद को अब त्यागना होगा,

बंधन तोड़ आगे बढ़ना होगा।”⁸

● महादेवी वर्मा का साहित्यिक योगदान –

1982 में भारतीय साहित्य में महादेवी वर्मा के योगदान के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें भारत सरकार से पद्म भूषण और साहित्य अकादमी सहित कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हुए हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा, साहित्य

और समाज के प्रति योगदान के कारण उन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य की सरस्वती भी कहा जाता है। महादेवी वर्मा का साहित्यिक योगदान बहुआयामी है। वह छायावाद की प्रमुख स्तंभों में से एक है। उन्होंने महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में भी अपनी कलम चलाई है। साहित्य में उनका योगदान हिन्दी साहित्य का एक अनिवार्य हिस्सा है, जिसके लिए उनको कई सम्मान प्राप्त हुए हैं।

● निष्कर्ष

महादेवी वर्मा का योगदान हिन्दी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण और अतुलनीय है। उनका साहित्य न केवल छायावाद आंदोलन का एक केंद्रीय हिस्सा है, बल्कि यह समकालीन समाज और साहित्यिक प्रवृत्तियों के लिए एक अमूल्य धरोहर भी प्रस्तुत करता है। महादेवी वर्मा ने अपने अद्वितीय विचार और दृष्टिकोण के माध्यम से हिन्दी कविता को एक नई दिशा और गहराई दी है। उनकी काव्य शैली मुख्यतः व्यक्तिगत अनुभव और भावनाओं से ओत-प्रोत है। आज भी साहित्य प्रेमियों के लिए महादेवी वर्मा तथा उनका लेखन कार्य एक प्रेरणा स्रोत है। महादेवी वर्मा का साहित्य सिर्फ साहित्य प्रेमियों की धरोहर नहीं है, बल्कि यह समकालीन साहित्य और समाज में भी प्रासंगिक है। उनके विचार और काव्य शैली ने हिन्दी साहित्य को बहुत ऊँचाई तक समृद्ध किया है। आने वाली पीढ़ियों के लिए महादेवी वर्मा प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी रचनाओं का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को समझने में भी सहायक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मैं नीर भरी दुख की बदली, महादेवी वर्मा, सांध्यगीत (संकलित), 1936
2. नारीत्व का अभिशाप – निबंध, महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ
3. मैं नीर भरी दुख की बदली, महादेवी वर्मा, सांध्यगीत (संकलित), 1936
4. नारीत्व का अभिशाप – निबंध, महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ
5. मनुस्मृति
6. नारीत्व का अभिशाप – निबंध, महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ
7. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास
8. जाग तुझको दूर जाना, महादेवी वर्मा, सांध्यगीत (संकलित), 1936

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल
2. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन
3. अमृत संचय, महादेवी वर्मा
4. हिन्दी साहित्य और साहित्यकार, सुधाकर पाण्डेय